अनित्यतावाद —परिवर्तित / अनुयायियों ने→ क्षणिकवाद

भिन्न अर्थ < अनित्य – सांसारिक वस्तुएँ
क्षणिक – आत्मा

↓

क्षणिकवाद - अर्थ - केवल यह नहीं कि वस्तुएं शाश्वत या नित्य नहीं है अपितु यह भी कि अस्तित्व कुछ समय के लिए भी नहीं रहता।

'किसी वस्तु का उसकी उत्पत्ति के तुरंत बाद विनाश'

↓

संसार में वस्तुएं क्षणिक है - 'अर्थक्रियाकारित्वं लक्षणं सत्'
↓ क्षणिक

स्थायी एवं नित्य सत् नहीं हो सकता।

उदा०- बीज सत् है – क्योंकि कार्यक्षमता (अर्थक्रियाकारित्व) है।
↓
अंकुर उत्पन्न होना

'यत् सत् तत्क्षणिकम्'

↓

अन्य सम्प्रदाय

सर्वास्तिवाद (वैभाषिक) - सर्वं क्षणिकं - संतानवाद
सर्वं अनात्मं - संघातवाद

विज्ञानवाद - जड़ तत्व की सत्ता नहीं - 'केवल क्षणिक विज्ञानों का प्रवाह'

शून्यवाद - वस्तु के साथ विनाश भी अस्वीकृत
सत्ता - प्रपंचशून्य
जगत - स्वभाव शून्य > अनिर्वचनीय.

आलो०: ① जैन - कर्मवाद असंगत, दुःख एवं निर्वाण के विचार में दोष
स्मृति एवं प्रत्यभिज्ञा की व्याख्या कठिन.

② शंकर - कारण की सत्ता एक से अधिक क्षण तक हो < स्मृति / प्रत्यभिज्ञा > दोष

③ सत् अर्थक्रियाकारी है → अर्हत आत्म संतति का अंतिम क्षण सत् है? वह अनुवर्ती क्षण उत्पन्न नहीं करता अर्थात असत् है तब पूर्ववर्ती क्षण भी असत् होंगे।

प्रत्यभिज्ञा और स्मृति की व्याख्या नहीं।

④ दुःख भी क्षणिक - प्रयास व्यर्थ

⑤ ज्ञान की समस्या - आत्मा क्षणिक विज्ञानों की संतति, अतः ज्ञान संभव नहीं।

अनात्मवाद

सम्बन्ध – प्रतीत्य समुत्पाद
↓
अनित्यवाद
↓
क्षणिकवाद
↓
अनात्मवाद

अर्थ – अजर-अमर आत्मा का निषेध
आत्मा के अस्तित्व का निषेध नहीं।
ब्राह्मण संघ से भिन्न अवधारणा

↓
मनोवैज्ञानिक विश्लेषण – क्षणिक संवेदनों एवं विचारों की जगह आत्मा एवं जीव की कल्पना अनुचित।
'परिवर्तनशील क्षणिक क्रियाओं का प्रवाहमात्र'

↓
आत्मा का विश्लेषण घटकों में – नागसेन-मिलिन्द संवाद – पंचस्कंध का संघात
रूप, संज्ञा, वेदना, संस्कार, विज्ञान
↓
भौतिक घटक — मानसिक घटक

समष्टि – आत्मा
संघात

↓
पाश्चात्य दर्शन से समानता

– (ह्यूम) – जब मैं अपनी आत्मा को पकड़ने के लिए अपने भीतर अत्यंत गहराई से प्रवेश करता हूँ तो मैं कुछ संवेदनाओं से टकराकर रह जाता हूँ जो सुख, दुख, इच्छा आदि होते हैं।

विलियम जेम्स – यथार्थ वस्तु नहीं वरन् 'आलंकारिक भाषा' है।

(कांट) – संवेदनाओं मानसिक आवेगों एवं भावनाओं के सम्मिश्रित पुंज को आत्मा नाम दे दिया गया है।

आलो० – (i) ज्ञान की समस्या (ii) पुनर्जन्म की अवधारणा खंडित। – बौद्ध उत्तर देते हैं – दीपशिखा का उदा.
(iii) कर्मवाद अतार्किक (iv) प्रत्यभिज्ञा एवं स्मृति की व्याख्या नहीं।